समझदार बूढ़ी औरत
एक जापानी लोककथा

समझदार बूढ़ी औरत

एक जापानी लोककथा

बहुत पुरानी बात है. जापान में जंगलों से घिरे एक गांव में एक युवा किसान अपनी बूढ़ी माँ के साथ रहता था. वहां का राजा बहुत क्रूर और अत्याचारी था.

"सत्तर साल से ज़्यादा उम्र के लोग किसी भी काम के नहीं होते," राजा ने ऐलान किया, "इसलिए उन्हें मरने के लिए पहाड़ी पर अकेला छोड़ दिया जाएगा."

जब युवा किसान की माँ 70 साल की हुई तो वो क्या करे, यह उसे कुछ समझ में नहीं आया. वो अपनी माँ के पहाड़ी पर मरने की बात सोच तक नहीं सकता था. फिर जो शब्द वो नहीं कह पाया वो उसकी माँ ने कहे.

"बेटा, अब मुझे पहाड़ी पर छोड़कर आने का वक्त आ गया है," माँ ने हल्की सी आवाज़ में कहा.

फिर अगले दिन सुबह-सुबह किसान ने अपनी माँ को कंधे पर उठाया और बड़ी बेमनी से पहाड़ी पर चढ़ने लगा.
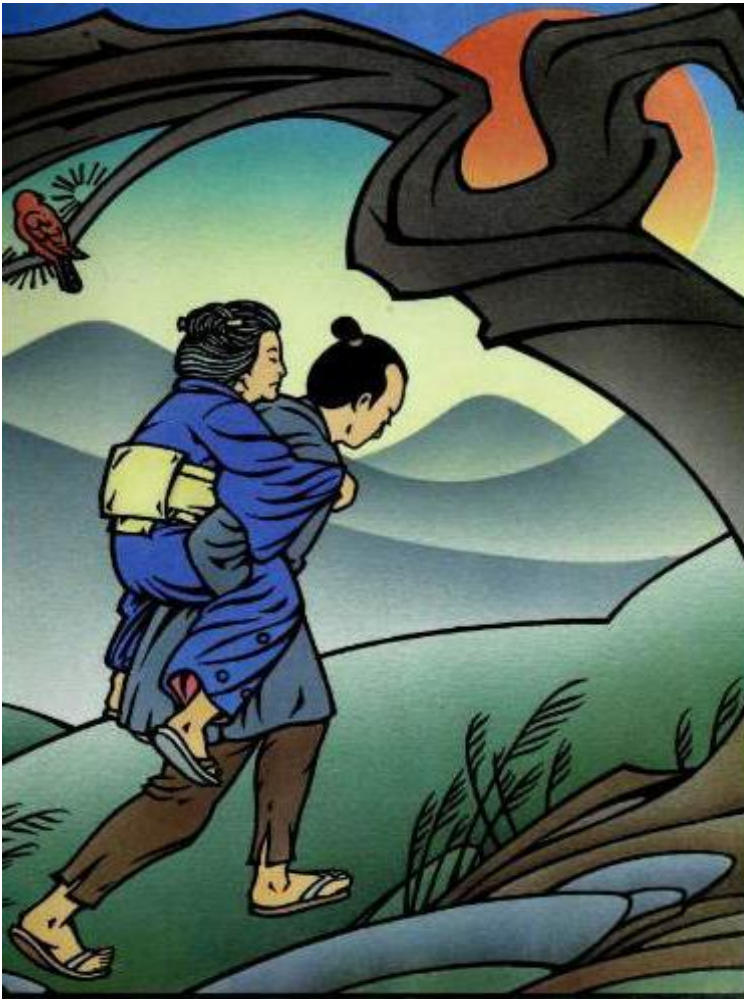
पहाड़ी पर वो बहुत ऊंचा चढ़ा. अंत में पेड़ों के
झुरमुटों में पगडंडी गुम हो गई, और सूरज
भी छिप गया. अब उसे किसी चिड़िया की
चहचहाहट तक सुनाई नहीं दे रही थी.
उसे सिर्फ पेड़ों के बीच बहती हवा की तेज़
सायं-सायं ही सुनाई दे रही थी.
पर वो और ऊंचाई पर चढ़ता गया. फिर उसे कुछ सुनाई दिया.
जैसे-जैसे वे पेड़ों के नीचे से गुज़र रहे थे, वैसे-वैसे माँ छोटी-छोटी
टहनियां तोड़कर नीचे फेंक रही थी.
"मैं रास्ते में छोटी-छोटी टहनियां गिरा रही हूँ बेटा, जिससे लौटते
वक्त तुम्हें रास्ता खोजने में ज़्यादा दिक्कत न हो," माँ ने कहा.
अब सब कुछ युवा किसान की बर्दाश्त से बाहर हो गया था.

"माँ, मैं तुम्हें पहाड़ी के इस वीराने में छोड़कर नहीं जा सकता," किसान ने कहा. "अब हम दोनों घर वापिस जायेंगे. मैं, तुम्हें कभी भी अपने से अलग नहीं रहने दूंगा."

फिर रात के स्याह अँधेरे में किसान अपनी माँ को वापिस घर लाया. उसने अपने किचन के नीचे एक गुप्त तहखाना बनाया. तब से माँ उस छोटे कमरे में रहने लगी. वो दिन भर कताई-बुनाई करती रहती थी. इस तरह दो साल बीत गए और किसी को भी किसान के गुप्त रहस्य का पता नहीं चला.

फिर एक दिन एक खूंखार योद्धा, उनके गांव में पहाड़ी तूफ़ान जैसे आया.

"मैं महान सम्राट हिल्गा का दूत हूँ," वो राजा को देखकर चिल्लाया.

"तीन सूरज उगने और तीन चाँद ढलने के बाद, सम्राट हिल्गा तुम्हारे राज्य को पराजित करेगा."

गांव का राजा बहुत बहादुर नहीं था. "अगर आप मुझे बक्श दें तो फिर आप जो कहेंगे मैं वो करूंगा," राजा ने दूत से प्रार्थना की.

"सम्राट हिल्गा कभी किसी को माफ़ नहीं करते," योद्धा ने गरजते हुए कहा, "पर वो होशियारी के कायल हैं. अगर तुम इस कागज़ पर लिखे इन तीन मुश्किल सवालों का उत्तर दे पाए, तब तुम्हारी जागीर सुरक्षित रहेगी."

उसके बाद योद्धा उस कागज़ को फेंककर उसी तेज़ी से गायब हो गया, जैसे वो आया था.

"सबसे पहले - राख से रस्सी बनाओ," राजा ने पढ़ा. "दूसरा - एक टेढ़े-मेढ़े लकड़ी के तने के अंदर से एक धागे को पिरोओ. तीसरा - एक ऐसी ढोलक बनाओ जो बिना पीटे आवाज़ करे."

उसके बाद राजा ने अपने राज्य के छह सबसे समझदार लोगों को इकट्ठा किया और उनसे उन कठिन और असंभव प्रश्नों के उत्तर ढूंढने को कहा. होशियार लोगों की मंडली पूरी रात उन सवालों के बारे में सोचती रही, जूझती रही. फिर सुबह हुई और मुर्गे ने बांग दी. पर अभी वो एक सवाल का भी उत्तर नहीं खोज पाए थे.

उसके बाद वो दौड़े-दौड़े गांव के मंदिर में गए और वहां जाकर उन्होंने पीतल के बड़े घंटे को ज़ोर-ज़ोर से बजाया. "हमारी मदद करो!" उन्होंने देवताओं से प्रार्थना की. पर भगवान बिल्कुल चुपचाप साधे बैठे रहे.

उसके बाद वे जंगल के समझदार जानवर ऊदबिलाव के पास गए. कई बार जानवर इंसानों से ज़्यादा समझदार होते हैं.
"तुम ज़रूर हमारी मदद कर पाओगे," उन्होंने बड़ी आतुरता से कहा.
पर जवाब में ऊदबिलाव ने सिर्फ अपना सर ही हिलाया. "वैसे मैं होशियार हूँ," उसने कहा, "पर इन असंभव पहेलियों का मेरे पास कोई जवाब नहीं है."

अंत में जब वो छह समझदार पंडित, राजा के पास बिना किसी उत्तर के, खाली हाथ लौटे, तो राजा उन पर एकदम बरस पड़ा.

"तुम लोग एक नंबर के गधे हो!" वो चिल्लाया. उसने तुरंत उन समझदार लोगों को काली कोठरी में बंद करवा दिया. उसके बाद राजा ने गांव के मुख्य चौक पर एक पोस्टर लगवाया - जो भी उन पहेलियों का जवाब देगा उसे सोने की मुहरों की एक थैली इनाम में मिलेगी.

युवा किसान ने भी वो पोस्टर पढ़ा. फिर वो दौड़ा-दौड़ा घर आया और उसने माँ को सम्राट हिल्गा के वो तीनों कठिन सवाल बताए. "हम क्या कर सकते हैं?" उसने उदास होकर माँ से कहा. "जल्द ही सम्राट हिल्गा हम पर कब्ज़ा कर लेगा."

माँ ने कुछ देर गंभीरता से सोचा. फिर उसने अपने लड़के से एक रस्सी, छेद वाला टेढ़ा लकड़ी का तना, और एक छोटी ढोलक लाने को कहा. किसान जब वो चीज़ें इकट्ठी करके लाया तभी माँ ने अपना काम शुरू किया.

सबसे पहले माँ ने रस्सी को नमकीन पानी में भिगोया और फिर उसे अच्छी तरह सुखाया. फिर उसने माचिस से उसे जलाया. पूरी जलने के बाद भी रस्सी गिरी नहीं, उसका आकार वैसा ही बना रहा.

"यह लो," माँ ने कहा. "यह रही राख की बनी रस्सी."

फिर माँ ने लकड़ी के टेढ़े तने के छेद के एक छोर पर कुछ शहद लगाया. उसने चींटी से रेशम का एक महीन धागा बांधा और तने के दूसरे छोर पर उसे रखा. किसान ने बड़े अचरज से देखा. शहद की तलाश में चींटी जल्दी ही तने के दूसरे छोर से बाहर निकली. चींटी के साथ रेशम का धागा भी था. अब दूसरी समस्या भी हल हो गई थी.

अंत में बूढ़ी औरत ने छोटी ढोलक को एक ओर से खोला. उसने ढोलक के अंदर एक भंवरा रखा और फिर से ढोलक को बंद किया. फिर जब भँवरे ने ढोलक में से निकलने की कोशिश की तब वो बार-बार ढोलक के चमड़े से टकराया. उससे बिना बजाए, ढोलक धीरे-धीरे बजने लगी. अब तीसरी समस्या का हल भी मिल गया था.

जब युवा किसान ने राजा को तीनों समस्याओं के हल दिखाए तो वो बेहद अचम्भित हुआ. "देखो, तुम जैसा युवा किसान, गांव के बड़े-बूढ़ों से ज़्यादा समझदार नहीं हो सकता है," उसने कहा. "मुझे सच-सच बताओ, इन असंभव लगने वाली समस्याओं को सुलझाने में तुम्हारी किसने मदद की?"

युवा किसान झूठ नहीं बोल सकता था. उसने राजा को सच बताया कि कैसे उसने अपनी माँ को पिछले दो सालों से घर में छिपा कर रखा था. "मेरी माँ ने ही सम्राट हिल्गा की इन तीनों समस्याओं का हल निकालकर हमारे गांव को बचाया है," उसने समझाया.

युवा किसान को लगा कि राजा उसे भी जेल की काली कोठरी में बंद करवा देगा. पर गुस्सा होने की बजाए राजा बहुत देर तक शांत रहा और सोचता रहा.

"मैंने गल्ती की," राजा ने अंत में कहा. "आज से मैं किसी भी बूढ़े इंसान को मरने के लिए पहाड़ी पर नहीं भेजूंगा. आज से गांव में बूढ़े लोगों के साथ सभी लोग आदर के पेश आएंगे. बूढ़े लोग हमें अपनी समझदारी सिखाएंगे."

उसके बाद राजा ने जेल की काली कोठरियों से सब बंदियों को रिहा कर दिया. राजा ने युवा किसान की बूढ़ी माँ को बुलाकर उन्हें तीन सोने की मुहरों की थैलियां इनाम में दीं.
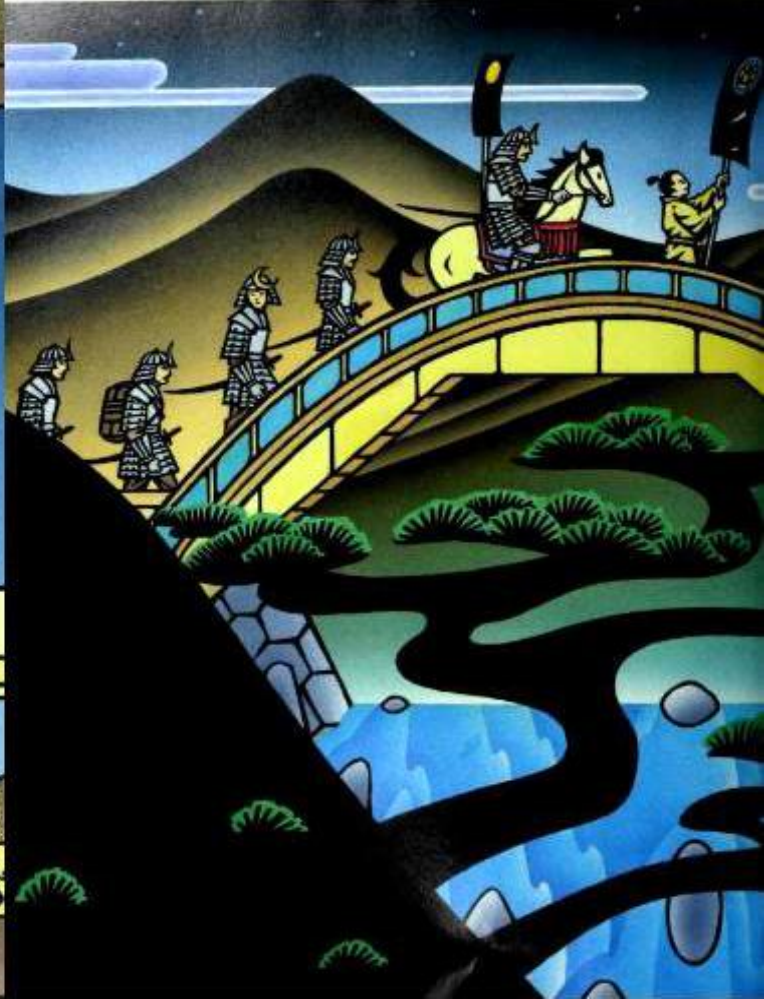
अंत में राजा ने युवा किसान को अपने सभी बहादुर सैनिकों के साथ समस्याओं के हल को लेकर सम्राट हिल्गा के महल में भेजा.

धीरे-धीरे वो कारवां पहाड़ी पगडंडियों के ऊपर बढ़ा. सबसे आगे युवा किसान था. वो राजा के झंडे को अपने हाथ में उठाए था. जब सम्राट हिल्गा को राख की रस्सी, टेढ़े-मेढ़े तने में से पिरोया धागा और खुद बजती ढोलक दिखाई गई, तो वो बेहद प्रभावित हुआ और उसने अपनी दाढ़ी सहलाई.

"मुझे लगता है कि तुम्हारे गांव के लोग बहुत समझदार और होशियार हैं," उसने कहा, "क्योंकि तुम लोगों ने तीन असंभव लगने वाली समस्याओं को सुलझाया है, इसलिए तुम अब आराम से घर जाओ," सम्राट हिल्गा ने युवा किसान से कहा, "अपने लोगों से कहो कि वे अब शांति से अपनी ज़िंदगी जिएं." उसके बाद से सम्राट हिल्गा ने कभी दुबारा उस छोटे गांव पर आक्रमण नहीं किया. छोटा गांव धीरे-धीरे बहुत समृद्ध हुआ. युवा किसान अपनी माँ ने साथ वहां बहुत साल जीवित रहा.

समाप्त